संत थॉमस स्कूल, धुर्वा, राँची - 4

मॉडल उत्तर

कक्षा – पाँच   विषय – हिंदी

पाठ – 7 कर्मवीर (कविता)

पुस्तक – दिव्य भारती - 5

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये :–

उत्तर (I) कर्मवीर निर्णय लेने से पहले सभी के सुझाव , सभी की बात सुनते हैं किंतु निर्णय हमेशा अपनी मन से ही लेते हैं। वो अपनी मन की बात ही मानते हैं।

उत्तर (II) मुश्किल चाहे कितनी बड़ी हो कर्मवीर उस से घबराते नहीं हैं। कर्मवीर हर मुश्किलों का सामना डट कर करते हैं।

उत्तर (III) 'गाँठ खोलने' का अर्थ है समस्याओं का हल निकालना। कर्मवीर अपने पुरुषार्थ से कैसी भी गाँठ खोल सकते हैं अर्थात किसी भी समस्या को हल कर सकते हैं। इस मुहावरे के द्वारा कवि यह बताना चाह रहे हैं कि कर्मवीर के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :–

उत्तर (I) उपरोक्त वाक्यांश कर्मवीरों के लिए कहा गया है।

उत्तर (II) 'चिलचिलाती धूप' उपमा का प्रयोग कवि ने कठिन समस्याओं के लिए किया है।

उत्तर (III) इस संसार का कोई भी कार्य असंभव नहीं है, कर्मवीर अपने जी में यह ठान लेते हैं।

उत्तर (IV) कर्मवीर सारी कठिनाइयों का हँस हँस कर सामना करते हैं। लोहे के चने चबा लेने से कवि का यही आशय है।

उत्तर (V) 'थकते नहीं' से कवि का अभिप्राय है कि संघर्ष का समय चाहे जितना भी लंबा हो कर्मवीर कभी भी उबते नहीं हैं। काम को पूरा करते समय यदि कोई भी मुसीबत आ जाए तो कई लोग हताश होकर कार्य बीच में ही छोड़ देते हैं। कर्मवीर किसी भी कार्य को बीच में छोड़कर नहीं जाते हैं।

3. दी गई पंक्तियों के सही उत्तर के सामने (√) लगाइए :–

उत्तर (ग) समय आने पर हर मुश्किल को हल कर लेते हैं। (√)

उत्तर (ख) वे हर समस्या का समाधान कर लेते हैं। (√)

4. कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए :–

उत्तर :- इस कविता का मूल भाव है कि जीवन संघर्षों से भरा रहता है। इसमें हर दिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। हर पल, हर पग चुनौतियों का सामना करना पड़ता है परंतु इन्हें स्वीकार करना चाहिए। इससे

घबरा कर पीछे नहीं हटना चाहिए। संकटों का सामना स्वयं ही करना चाहिए। बिना थके , बिना रुके, बिना हार माने इस जीवन के पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

5. दिये गए काव्यांश को पढ़ कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-

सच है -- राह बनाते हैं।

उत्तर (**I**) मुसीबतों से कायर डरते हैं।

उत्तर (**II**) सूरमा की यही पहचान है कि वे कभी विचलित नही होते हैं न ही क्षण भर को भी अपना धैर्य खोते हैं।

उत्तर (**III**) सारे बाधाओं का सामना करते हुए सूरमा काँटों में भी अपना राह बना लेते हैं।

====समाप्त====